P: ISSN NO.: 2321-290X RNI : UPBIL/2013/55327 VOL-6* ISSUE-8* (Part-1) April- 2019
E: ISSN NO.: 2349-980X **Shrinkhla Ek Shodhparak Vaicharik Patrika**

कबीर दर्शन वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य की महत्ता

सारांश

प्रस्तुत शोध पत्र ''कबीर दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य की महत्ता'' में दर्शन शब्द के अर्थ को बताया गया है तथा भारतीय एवं पश्चात्य दार्शनिकों के दर्शन को परिभाषित किया गया है। वर्त्तमान समाज, देश विदेश की समस्याओं में आए मानव मूल्यों पर मडराती संकटों को दर्शाया गया है जिसमें वस्तुस्थिति उबरने का उपाय कबीर दर्शन तथा कबीर जैसे संत ज्ञानियों की आवश्यकता पर बल दिया गया है। मानव चेतना पर ही मानवता की स्थापना होती है और इसका अधार कबीर के समकालीन स्थिति और वर्तमान स्थितियों पर काबु पाने का आधार संत दर्शन की है, जिसमें कबीर और उनके दर्शन को तब और आज के समय में भी उतना ही उपयोगिता को दर्शाया गया है।

मुख्य शब्द : कबीर दर्शन, उपनिषद।

पूनम त्रिपाठी
शोधार्थी,
हिन्दी विभाग,
ए. पी. एस. यूनिवर्सिटी
रीवा (म.प्र.), भारत

प्रस्तावना

दर्शन शब्द संस्कृत के दृश् धातु से बना है–''दृश्यते यथार्थ तच्वमनेन'' अर्थात् जिसके द्वारा यथार्थ तत्व की अनुभूति हो वही दर्शन है। भारतीय अवधारण के अनुसार दर्शन के क्षेत्र केवल ज्ञान तक सीमित न रहकर समग्र व्यक्तित्व को अपने आप में समाहित करता है। दर्शन चिन्तन का विषय न होकर अनुभूति का विषय है। ऐसा माना जाता है कि कबीर दर्शन अनुभूति का विषय हैं–

''मैं कहना है। आंखिन देखी, तू कहता कागज की लेखी।
मैं कहता सुरझावन हारी, तू राख्यौ उरझोई रे।।'' [1]

(कबीरःपृष्ठ–163)–लोगों के कथनी और करनी में एकरूपता होनी चाहिए जो कबीर दास के दर्शन इसकी साक्षात प्रतिमूर्ति हैं। कबीर सदाचरण पर बल देते हैं, शास्त्र ज्ञान पर नहीं। इस अनुभूति परक दर्शनिक कबीर का जन्म लहरतारा ताल काशी में 1398 ई0 और मृत्यु 1518 ई0 मगहर में हुआ था। इनके पालक माता–पिता का नाम नीरू और नीमा था, जो जाति के जोलाहे थे। हिन्दी साहित्य में उनका उदय भक्ति काल से माना जाता है। भक्तिकाल में संत काव्य का दार्शनिक आधार शंकराचार्य एवं उपनिषदों द्वारा प्रतिपादित अद्वैत दर्शन नाथपंथ, सूफी धर्म एवं इस्लाम है। उपनिषदों में निरूपित ब्रम्ह, जीव जगत एवं माया के स्वरूप को संत कवियों ने ज्यों का त्यो ग्रहण किया। संतों का साधना पक्ष और भक्ति भावना शंकराचार्य के अद्वैत दर्शन की देन है। दोनों ही जीव को विशुद्ध ब्रम्ह मानते है। ब्रम्ह एवं जीव में भिन्नता माया के कारण ही दिखाई देती है, ऐसा इनलोगों ने अपनी वाणी तर्कों में दिया है। आत्मा की सर्वरूपता सर्वशक्तिमता भी अद्वैत दर्शन के अनुरूप है। इनमें कबीर दास जी नाथपंथियों से शून्यवाद, योगसाधना गुरू की प्रतिष्ठा का तत्व किया। इस्लाम के प्रभाव से उन्होंने एकेश्वरवाद ग्रहण किया मूर्ति पूजा का खण्डन किया और अवतारवाद का विरोध किया। सूफियों से प्रेमभाव ग्रहण किया और दाम्पत्य प्रतीकों का प्रयोग, भक्ति भावना की अभिव्यक्ति हेतु किया। बौद्धो और वैष्णवों की अहिंसा को भी अपनाया। वे भक्तिकाल में प्रवाहित दो धाराएं सगुण तथा निर्गण में से निर्गुण धारा के प्रमुख कवि माने जाते है। सन्त कवि कबीर ने नाथ पंथियों की हठयोग साधना में ''भक्तिभावना'' का समावेश कर उसकी नीरसता को सरसता में परिवर्तित कर दिया। कबीर दास रामानन्द के शिष्य थे तथा वैष्णवों के प्रति आदर भाव रखते थे। भक्ति भावना के लिए द्वैत आवश्यक है, जो सगुणोपासना में ही संभव है; क्योंकि निर्गुणोपासक तो आत्मा और परमात्मा के अद्वैत पर अधिक बल देते है! इसलिए कबीर की भक्तिभावना सूर–तुलसी जैसी नहीं है। कबीर यह स्वीकार करते है, कि भवसागर से पार जाने का साधन भक्ति है। इस भक्ति के अभाव में ही मानव ''भव जल'' में डूबता हैं– भगति बिन भौजलि डूबत है रे ![2] कबीर दास जी के भक्ति भावना का आधार ईश्वर का नाम स्मरण आचारण की शुद्धता, शरणागति, विश्वास, वैराग्य, माधुर्य भाव, दास्य भाव तथा नवधा भक्ति का स्वरूप हैं।

अध्ययन का उद्देश्य

प्रस्तुत निबंध ''कबीर दर्शन वर्त्तमान परिप्रेक्ष्य की महत्ता'' के अध्ययन का मूल उद्देश्य उस सामाजिक दर्शन से है, जिसके बल पर कबीर दास जी अपने समकालीन अव्यवस्थित समाज को सुव्यवस्थित बनाने में महान समाज सुधारक के रूप में दिखाई देते हैं। उन्होंने अपने युग में व्याप्त सामाजिक अंधविश्वासों, कुरीतियों और रूढ़िवादिता का विरोध किया। उनका उद्देश्य विषमताग्रस्त समाज में जागृति पैदा कर लोगों को भक्ति का नया मार्ग दिखाना था, जिसमें वे काफी हद तक सफल भी हुए। कबीर दास जी ने कहा था कि–

''बुरा जो देखन मैं चला, बुरा न मिलिया कोय।
जो दिल ढूँढ़ो आपनो, मुझसा बुरा न कोय।।[3]''

आज हमारे बीच कबीर दर्शन और कबीर जैसे संत की आवश्यकता है, क्योंकि आज भी हमारे समाज देश और विश्व के देशों में बढ़ती हुई भूखमरी, अशिक्षा, बेरोजगारी, स्वार्थलोलुपता अनेकता आदि समस्याओं से सारी मानव जाति चिंतित है। वास्तव में ये ऐसी मूलभूत समस्याएँ है जिनसे निकलकर ही हत्या लूट मार–काट, आतंकवाद, धार्मिक विद्वेष, युद्धों की विभिषिका आदि समस्याओं ने जन्म लिया है। ऐसी भयावह परिस्थिति में समाज को सही राह दिखाने के लिए कबीर दर्शन को वर्तमान परिप्रेक्ष्य के उद्देश्य से अध्ययन किया गया है ताकि समाज को सही दर्शन मिले और अध्येता के बीच से ही पुनः कबीर उत्पन्न हो सके तथा इनके दर्शन को हृदयगमन करते हुए इस अंधकार मय संसार की ज्योतिपुंज को आगे बढ़ा सके।

कबीर का प्रादुर्भाव ऐसे समय में हुआ जब समाज अनेक बुराईयों से ग्रस्त था। छुआछूत, अन्धविश्वास, रूढ़िवादिता, मिथ्याचार, पखाण्ड का बोल बाला था और हिन्दू मुसलमान आपस में झगड़ते रहते थे, धार्मिक पाखण्ड अपनी चरम सीमा पर था। और धर्म का ठेकेदार स्वार्थ की रोटियां धार्मिक उन्माद के चूल्हे पर सेक रहे थे। धार्मिक कट्टरता और संकीर्णता के कारण समाज का संतुलन बिगड़ रहा था, कुरीतियों एवं कुप्रथाओं का बोल बाला था। भयावह स्थिति ऐसी थी कि समाजिक विषमता बढ़ती जा रही थी! उस समय ऐसे महात्मा या समाज सुधारक की आवश्यकता थी जो समाज में व्याप्त इन बुराईयों पर निर्भीकता से प्रहार कर सके। बाह्य आडम्बर से भरे दोनों अनुयायियों को बिना किसी भेदभाव के फटकार सके, और सदाचार का उपदेश देकर सामाजिक समरसता की स्थापना करे। कबीर दास इस आवश्यकता की पूर्ति करते नजर आते है! हमारे वर्तमान समय में भी समाज सम्प्रदायिक हिंसा मार–पीट–लूट घोरवा घरी तथा मानवता को शर्मसार करने वाली कुव्यवस्था, शोषण अत्याचार उग्रवाद नक्सलवाद आदि समस्याओं से जुझ रहा हैं। आज समाज देश और विश्व के देशों में बढ़ती हुई असमानता भूखमरी अशिक्षा बेरोजगारी स्वार्थ लोलुप भ्रष्ट राजनीति कुशासन आतंकवाद धार्मिक विध्वंस, युद्धों की विभिषिका आदि मानव मूल्यों को निगलने के लिए सुरसा की तरह मुँह वाये खड़ी है। आज हमें कबीर दर्शन रूपी हनुमान की आवश्यकता है, जो अपनी सूक्ष्म बौद्धिकता से इस धरा पर मानवमूल्यों की स्थापना कर सके। भारत में दर्शन का उद्भव असंतोष से माना जाता हैं। हम वर्तमान में असंतुष्ट होकर श्रेष्ठतर की खोज करना चाहते है। यही खोज दार्शनिक गवेशणा कहलाती है। दर्शन के विभिन्न अर्थ बताए गए है। उपनिषद काल में दर्शन की परिभाषा थी–''जिसे देखा जाए अर्थात् सत्य के दर्शन किये जाये वही दर्शन है। डॉ0 सर्वपल्ली राधाकृष्णन के अनुसार–''दर्शन वास्तविकता के स्वरूप का तार्किक विवेचन हैं।''[4] अरस्तु के अनुसार–''दर्शन एक ऐसा विज्ञान है, जो परम तत्व के यर्थाथ स्वरूप की जॉच करता है।''[5] इस प्रकार विद्वानों द्वारा दर्शन परिभाषित हुए है, पर कबीर दर्शन अपने युग की दर्शन थी। इनके दर्शन ज्ञान की वह शाखा है जिसमें, सम्पूर्ण ब्रम्हाण्ड एवं मानव के वास्तविक स्वरूप सृष्टि–सृष्य आत्मा–परमात्मा, जीवन–जगत, ज्ञान–अज्ञान का तार्किक विवेचन है। अतः आज भी हमारे समाज को कबीर दर्शन की आवश्यकता है, ताकि वर्तमान परिस्थितियों से जुझते समाज को दिशा मिल सके। वर्तमान समय में हमारे भारतीय दर्शनिक चिंतक समाज की समस्याओं से निपटने के लिए प्रयासरत है। देश और विश्व के देशों में बढ़ती हुई भुखमरी, अशिक्षा, बेराजगारी, स्वार्थ लोलुपता, अनेकता आदि समस्याओं से जूझ रहा है, ऐसे में देश को कबीर जैसे महात्मा और उनके दर्शन की आवश्यकता है ताकि मानव जाति को विध्वंश करने वाली हत्या लूट मार–काट, आतंकबाद, धार्मिक विदूेष, युद्धों की विभिषिका आदि समस्याओं पर विजय प्राप्त हो सकें।

विश्व में मानवता को नष्ट करने वाली समस्याओं के लिए संसार रूपी सागर में अनंत दर्शनरूपी ज्योति समाज के अंधकार को मिटाने में ज्योर्तिपूंज की तरह दिखाई दे रहे है। कबीर सत्य का अन्वेषक और धर्म के विश्लेषक थें। कबीर साधुकक्ड़ी भाषा में किसी भी संप्रदाय के रूढ़ियों तथा कट्टरपंथ का खुलकर विरोध किया। उन्होंने ऊँच–नीच तथा जाति पाति के भेद भावों का विरोध किया। आज हमारा समाज ऐसे संत महात्मा के दर्शन और विचार भावना से प्रभावित होकर अपने विकट परिस्थितियों का सामना कर सकेगा। आज जहाँ पंडित–पंडा अपने भोग विलास के लिए लोगों को गुमराह कर रहे है! नित्य समाचार पत्रों में ऐसे मुखौटे ओढ़े साधुओं की करतूतें पढ़ने को मिल रही हैं, जिसमें लोगों को धर्म के नाम पर न जाने कितने तरह का शोषण हो रहे है, ऐसे में कबीर जैसे ज्ञानी और उनके दर्शन कितने उपयोगी हैं ? यह वेहिचक कहा जा सकता है। कबीरदास मूर्ति पूजा, माला, तिलक, छापा तीर्थाटन, गंगास्नान, रोजा, हिंसा, जाति प्रथा ऊँच–नीच की भावना आदि का खण्डन किया हैं– ''माला फेरत जुग गया, मिटा न मन का फेर।

करका मनका डाारि दै, मनका मनका फेर।।[6] (कबीर दोहावली पृ0 सं0 38) कबीरदासजी हिन्दू और मुसलमान दोनों को फटकार लगाते, इन ढोंगियों को कहते हैं कि तीर्थाटन, छापा, तिलक रोजा नमाज अजान और माला फेरने से ईश्वर प्रसन्न नहीं होते। ईश्वर के प्रसन्नता के लिए मन की शुद्धि चाहिए। कबीर समाज सुधारक पहले,

भक्त और कवि बाद में दिखाई देते है। उनके दर्शन का उद्देश्य जनता को उपदेश देना और उनको सही रास्ता दिखाना हैं। उन्होंने जो देखा समझा उसका निर्भीकता से खण्डन किया। वे समाज में व्याप्त जाति–प्रथा, छुआछूत एवं ऊँच–नीच की भावना पर प्रहार करते हुए कहते है कि जन्म के आधार पर कोई ऊँचा नहीं होता, ऊँचा वह है जिसके कर्म अच्छें हैं–

''ऊँचे कुल क्या जनमियाँ करनी ऊँच न होय।
सुबरन कलस सुरा भरा साधू निन्दत सोय।।''[7]
(कबीर दोहावली पृ0 सं0 25)

आज हमारे देश में स्वार्थी लोलुप पक्ष–विपक्ष राजनीतिक पार्टी वोट बैंक के लिए मंदिर मस्जिद के मुद्दे उठाकर जनता को गुमराह करते है। इसपर कबीर समान्य जनता को समझाते हुए कहते हैं कि मूर्ति पूजा से भगवान नहीं मिलते इससे तो अच्छा घर की चाकी को पूजा जाए–

''पाहन पूजैं हरि मिलैं तो मैं पूजूं पहार,
घर की चाकी कोई न पूजे पीस खाय संसार।।[8]
(कबीर दोहावली पृ0 सं0 22)

कबीर दास जी मानव जीवन और मानवता के महत्व को बताते हुए कहते हैं कि हमें अपना जीवन भोग–विलास में यूँ ही व्यतीत नहीं करना चाहिए बल्कि हमें अपनी मानवता को बचाए रखने के लिए अच्छे कर्म करना चाहिए। यह जीवन क्षणभंगूर हैं–

''पानी के रा बुदबुदा, इस मानुष कै जात,
देखत ही छिप जाएँगे, ज्यों तारा परभात।।'[9]

आज हमारे बीच मारो काटो लूटों आदि का बोल बाला है। इस समाज को कबीर दर्शन की आवश्यकता है, जो निर्भिक होकर समाज को दशा व दिशा दे सके।

आज भारतीय संस्कृति एवं सभ्यता का ''वासुधैव कुटुम्बकम'' का मूल मंत्र संसार से लुप्त होता जा रहा हैं। हिन्दू, मुस्लिम, सिख, ईसाई आदि कितने कौम के लबादे होढ़े खड़े आदमी तो, नजर आ रहे है पर आदमियता कही खो गई है। कबीर ने राम–रहीम, केशव महादेव और मोहम्मद की एकता, पर बल दिया। उन्होंने सम्पूर्ण समाज को एकता के सूत्र में बाँधने का प्रयास किया है।

''दुई जगदीश कहाँ ते आया,
कहु कौने भरमाया।।''[10]

आज हमारे बीच मंदिर, मस्जिद को लेकर न जाने कितनी समस्याएँ उत्पन्न होती हैं। अंधविश्वास व रूढ़िवादिता धर्म के नाम पर कड़ोरों रूपये खर्च किए जाते हैं, मंदिर, मस्जिद गुरूद्वारे सभी जगह जाते हैं, पर क्या समाज का वास्तविक धर्म जो जीव मात्र से प्रेम स्थापना हो पाई है? कबीर दास जी कहते हैं–

''मोको कहाँ ढूँढे बन्दे, मै तो तेरे पास में
ना देवल में ना मस्जिद में, ना काबे कैलास में।।[11]
(कबीर दोहावली पृ0 सं0 27)

आज हमारे समाज में भ्रष्टाचार एक जटील समस्याएँ बन चुकी है। सामान्य कर्मचारी से लेकर ऊँचे–ऊँचे पदों पर आसीन अधिकारी सभी भ्रष्टाचार के पर्याय बने हुए हैं। जब हमारे देश के नेता भ्रष्टाचार में डूबे होंगें तो भला समान्य व्यक्ति उससे कबतक अछूता रह सकता है। आज भ्रष्टाचार के फलस्वरूप देश को महँगाई कालाबाजारी का दंश भोगना पड़ रहा है। भोली–भाली जनता इनके द्वारा शोषण का शिकार है। आज हमारे समाज के लोग साधारण जन को ठग कर महल तैयार कर रहे है जहाँ कबीर अपने युग के प्रतिपूर्ण सचेत दिखाई दे रहे है–''

''सांच बराबर तप नही झूठ बराबर पाप।
जाके हिरदय सांच है ताके हिरदय आप।।[12]
(कबीर दोहावली पृ0 सं0 25)

भले ही हम ठगे जाएँ, किन्तु दुसरे को कभी न ठगे यही कबीर दर्शन की आदर्शता हैं!

कबीर दास अपने तत्कालीन समाज में प्रचलित विडम्बना देखकर चंकित थे समाज की इस दुहरीनीति पर जहॉ पंडित शुद्रो को अपना घड़ा छूने नहीं देते, पर वेश्या के पैरो तले सोते हैं। समाज में छुआछूत का प्रचलन जोरों पर देखकर कबीर ने उसका खण्डन किया। उन्होने पाखंडी पंडित को संबोधित करते हुए कहा कि छुआछूत की बीमारी कहॉ से उपजी–

''तुम कत ब्राहण हम कत सूद,
हम कत लौहू तुम कत दुध,
जो तुम बाभन बाभनि जाया,
आन घाट काहे नाहि आया।। [13]

इस प्रकार कबीर ने समाज व्यवस्था पर नुकीले एवं मर्मभेदी अंदाज से प्रहार किया। समाज में व्याप्त आडम्बर, कुरीति, व्यभिचार, झूठ और पाखण्ड देखकर वे उत्तेजित हो जाते और चाहते है कि जन–साधारण को इस प्रकार के आडम्बर एवं विभेद से मुक्ति मिले और उनके जीवन में सुख–आनंद का संचार हों।

आज के संदर्भ में भी यही बात कही जा सकती है कि आज भी भारतीय समाज की वही स्थिति है, जो कबीर काल में थी। सामाजिक आडंबर भेद–भाव, ऊँच–नीच की भावना समाज में व्याप्त है। व्याभिचार, भ्रष्टाचार लूट, मार, काट दहेज, मौत, आत्महत्या आदि का आए दिन सामाचार पत्रों में खबरे छपती रहती है। समाज के सभी स्तर पर यही स्थिति हैं। राजकीय अस्पतालों में जो रोगी इलाज के लिए भर्ती होते है उन्हे भर पेट भोजन और साधारण औषधि भी नही मिलती। इसके अलावा अस्पताल में कई तरह की अव्यवस्था और अनियमितता है। प्रशासन व्यवस्था की लुंज–पुंज स्थिति के कारण आए दिन मनचले व्यभिचार की परिस्थितियाँ उत्पन्न करते है।

आज भले ही कबीर का जन्म आज से लगभग 600 वर्ष पूर्व हुआ हो किन्तु उनकी शिक्षाओं की आवश्यकता आज भी है। हम वैज्ञानिक उपकरणों एवं सुख–सुविधा के साधनों को जुटाकर भले ही, प्रगति का दावा करे किन्तु मानवता के मोर्चे पर, हम रंचमात्र भी प्रगति नही कर सके है। कबीर ने सर्व–धर्म समभाव का संदेश दिया। हिन्दुओं और मुसलमानों के उन दोषो को पूरी निर्भीकता से उजागर किया, जिनके आधार पर वे एक दूसरे के शत्रु बने हुए थे। क्या आज हिन्दू–मुसलमानों की समस्या सुलझ गई है? यदि नही तो आज भी कबीर दर्शन की सार्थकता उतना ही है। जितना पहले थी। आज भी हमारे बीच स्वच्छन्द विचारक की

आवश्यकता है जो मानवतावादी आस्था के साथ समाज में सुधार ला सके।

सुझाव

आज जो भयावह स्थिति हमारे देश में है, उससे बचने के लिए हमे संतो चिंतको एवं बुद्धिजीवियों के दर्शन से अवगत होना होगा। हमारे देश के संतज्ञानियों द्वारा उदघोषणा की गई है कि "नीति विहीन शासन कभी सफल नही हो सकता नीति और सदाचार अध्यात्म की जड़ है" हमें बाहरी चकाचौध को छोड अपनी सांस्कृतिक धरोहर को अपनाना होगा। शालीन गरिमामय जीवन में मानवता को स्थापित करना होगा और यही जीवन का उद्देश्य है। अध्यात्म और नैतिकता के बल पर ही मानवता को बचाया जा सकता है जिसका अचूक वाण कबीर दर्शन है, क्योंकि इनमें सार्वशौख सार्वभौम मानवतादी विश्वकल्याण की क्षमता है।

निष्कर्ष

उपरोक्त विवेचना के आधार पर कहा जा सकता है कि कबीर दर्शन वर्तमान परिप्रेक्ष्य में महत्वपूर्ण है क्योंकि इनके दर्शन अकृत्रिम, सहज एवं अनुभूतिजन्य है। आचरण की शुद्धता पर बल देकर एवं बाह्याडम्बर का खण्डन करके उन्होने समाज को एक नई दिशा दी। मनुष्यत्व की भावना को आगे करके उन्होने जनता में आत्म गौरव का गहत्त्व देकर वैचारिक क्रांति का सूत्रपात किया। मानवता को उच्च आदर्श पर प्रतिष्ठित करने के लिए उन्होने जो क्रांतिकारी विचार प्रस्तुत किए वे उनकी महानता को सिद्ध करने के लिए पर्याप्त माने जा सकते है। सामाजिक विसंगतियों, धार्मिक विडम्बनाओं रूढ़िवादी विचारों एवं अन्धविश्वासों का खण्डन करते हुए समाज को सशक्त, निर्दोष एवं कल्याणकारी मार्ग पर अग्रसर किया। जीव, ब्रम्हजगत और माया के संबंध में उनका विचार भारतीय दर्शन की परम्परा के अनुरूप है। वे धर्म में कर्मकाण्ड को महत्व न देकर आचरण पर बल देते है। वर्णाश्रम व्यवस्था पर करारी चोट की तथा बाह्याडम्बर का खुलकर विरोध किया। कबीर दास जी निरक्षण थे, उन्होने स्वयं स्वीकार किया है। "मसि कागद छूयौ नहीं कलम गहौ नहि हाथ" पर वे बहुश्रुत आवश्य थे, उन्हें जहां से जो कुछ भी लोगों के भलाई के लिए अच्छा लगा उसे ही अपनाया वे किसी एक धर्म का पल्ला न पकड़कर जिस तत्व को व्यावहारिक समझा, उसे ही दर्शन में स्थान दिया। वे समान्य मानव धर्म अथवा समाज की प्रतिष्ठा के लिए जिस साधन का प्रयोग किये थे, वह संसारिक नही अध्यात्मिक थी। आज हमारे दार्शनिक जिस ज्ञान और अध्यात्म की चर्चा कर रहे है, इसकी उद्घोषणा कबीर ने पंद्रहवी शताब्दी में ही की थी। अतः आज भी कबीर दर्शन उतना ही महत्व पूर्ण है जितना तब थी, बल्कि यूँ कहा जाये कि नैतिकमूल्यों के विघटित विषाक्त को कबीर दर्शन रूपी अमृत की आवश्यकता है, तो यह अतार्किक न होगी।

पाद टिप्पणी

1. *भारतीय दर्शन : सरल परिचय देवी प्रसाद चट्टोपाध्याय राजकमल प्रकाशन नई दिल्ली।*
2. *कबीरःआचार्य हजारी प्रसाद द्विवेदी राजकमल प्रकाशन ISBN: 13:9788126714971*
3. *कबीर दोहावली सं0 नीलोत्पल ,ग्रन्थ अकादमी नई दिल्ल ISBN-978-93-81063-13-2*
4. *कबीरः जीवन और दर्शन–उर्वशी सूरती लोक भारती प्रकाशन–2009 ई0 ISBN–978–814–8031240*
5. *कबीरः एक अंतहीन यात्रा–अनुराधा गुप्ता*
6. *कबीर खसम खुशी– क्यों होय?–डॉ0 धर्मवीर वाणी प्रकाशन ISBN–978–93–5072–427–9*